# गउडवहो काव्य की कथावस्तु

काव्य का प्रारम्भ विभिन्न देव-देवियों के नमस्कार एवं आदर्शों की लम्बी परम्परा से होता है। सर्वप्रथम ६१ गाथाओं में ब्रह्मा, हरि, नृसिंह, महावराह, वामन, कूर्म, मोहिनी, कृष्ण, बलभद्र, बालकृष्ण, मधुमथ, शिव, गौरी, सरस्वती, चन्द्र, सूर्य, अहिवराह, गणपति, लक्ष्मी; काम, गंगा नामक देवताओं का मंगलाचरण है।

इसके उपरान्त कवि प्रशंसा कुलक के ३६ गाथाओं में महा कवि, सुकवि, सामान्य कवि आदि की प्रशंसा और कवियों में भवभूति, भास, जवलनमित्र, कान्तिदेव, कालिदास, सुवंधु और हरिचन्द्र नाम गिनाये हैं। लक्ष्मी और सरस्वती की तुलना करते हुए कहा गया कि—अपूर्ण या असमय होने पर देवी सरस्वती तो केवल विडम्बना का ही लाभ कराती है, परन्तु लव-मात्र को भी लक्ष्मी का उपभोग करने वाला शोभायमान, तथा सुख प्राप्त करता है।

सच्चे कवि जादूगर के समान होते हैं जो सत्य और सम्पूर्ण को असत्य दर्शाते हुए वायुमण्डलीय शून्य को ठोस सिद्ध करते हुए या वस्तुओं को यथावत् सम्बोधित करते हैं। प्राकृत भाषा की प्रशंसा में कविराज कहते हैं—इसी भाषा में प्रचुर मात्रा में सदा बहार उद्देश्य एवं उत्कृष्ट शैली प्रस्फुटित होती है। प्राकृत में ही सभी भाषाएँ विसर्जित एवं उत्सर्जित होती हैं, जैसे पानी समुद्र से निकल कर समुद्र में ही विलीन होता है।

विषय वस्तु के प्रारम्भ में कवि ने नायक यशोवर्मा का गुण-गान करते हुए कहता है कि यशोवर्मा ही एक ऐसा प्रतापी राजा

Scanned with OKEN Scanner

श्रेणियों में रह रहें सबर जाति के लोग बड़ी भक्ति के साथ वे भगवती की आराधना करते हैं। वे उन्हें माधवी, भैरवी, चण्डि, नारायणी. शकरी, काली, सबरी, और तापसी आदि नामों से अभिहित करते हैं। उस मंदिर के तोरण द्वार पर अनेक घण्टे बंधे हुए हैं। जहाँ पर भगवती की मूर्ति महिषासुर मर्दन करते हुए दिखलाई गई हैं। महिषासुर के सिर के ऊपर अनेक चरण जिनके नख-दूज के चन्द्रमा की तरह दिखलाई पड़ते हैं। मंदिर के विग्रह में वीरों द्वारा वलिदान दिये जाने के कारण खड्ग रक्त रंजित है। कौल नारियाँ बध किये जाते हुए महा-पशु (मनुष्य) को प्राप्त करने के लिए एकत्रित हो रही हैं। देवी श्मशान में साधक लोग महामांस की विक्री कर रहे हैं। राजा विनम्र-भाव से देवी की स्तुति करता है। यहाँ बताया है कि गौड देश का राजा, यशोवर्मा के भय से पलायन कर गया। मगधाधिप के भागे हुए सहायक राजा लौट आते हैं। यशोवर्मा की सेना के साथ उनका युद्ध होता है, जिससे मगध-(गौड) के राजा का वध होता है। इसी धटना को लेकर प्रस्तुत रचना को गौडवध कहा गया है।

इसके अनन्तर यशोबर्मा ने एला से सुरभित समुद्र तट के प्रदेश में प्रयाण किया। वहाँ से बंग देश की ओर प्रस्थान किया। यह देश हाथियों के लिए प्रसिद्ध था। बंग राजा को पराजित किया, फिर मलय पर्वत को पार कर दक्षिण की ओर बढ़ा, समुद्र तट पर पहुँचा। जहाँ बालि ने भ्रमण किया था। फिर पारसीक जनपद में पहुँच कर वहाँ के राजा के साथ युद्ध किया। कोंकण को विजय को नर्मदा के तट पर पहुँचा, फिर मरुदेश की ओर गमन किया। वहाँ से श्रीकंठ गया। तत्पश्चात् कुरुक्षेत्र में पहुँचकर जल क्रीड़ा का आनन्द लिया। वहाँ से हरिचन्द्र की नगरी अयोध्या के लिए रवाना हुआ। महेन्द्र पर्वत के निवासियों पर विजय प्राप्त कर उत्तर दिशा की ओर गमन किया।

Scanned with OKEN Scanner

है जिसने पृथ्वी के सभी दुःखों को समाप्त कर इन्द्र को भी प्रसन्न कर दिया है। जिसके गुण पृथ्वी के चारों दिशाओं में व्याप्त है। वह उन्हे हरि के अवतार के रूप में मानते हुए कहता है कि संसार में प्रलय के पश्चात् केवल यशोवर्मा ही शेष वचा है। जब वह विजय यात्रा के लिए प्रस्थान करता है तो उसके सैन्य शक्ति के पैरों से उठी धूली स्वर्ग तक अच्छादित हो जाती है और इस भार से पृथ्वी को धारण करने वाला शेष नाग भी पीड़ा का अनुभव करने लगता है। इसके उपरान्त १३ गाथाओं में यशोवर्मा की महाशक्ति और सौंदर्य का वर्णन किया गया है। यशोवर्मा की समर शक्ति को देखकर देवङ्गनाओं के मन में भी मन्मथ विकार उत्पन्न हो जाता है। जिस महाशक्ति के प्रताप के कारण इन्द्र भी एकासन पर बैठने की कामना करता है।

अपने पराक्रम एवं शूरवीरता से उसने शत्रु राजाओं को पराजित कर अधीन कर लेता है तथा उन राजाओं की वापियों में वाराङ्गनाओं के साथ जल क्रीड़ा करता है। युद्ध में मारे गये शत्रु की स्त्रियाँ अनेक प्रकार से विलाप कर रहीं है। उनके बालबिखरे हुए हैं तथा अधैर्य होती हुई अश्रु-प्रवाह कर रही हैं।

वर्षा ऋतु के समाप्त होते ही वह दिग्विजय के लिए प्रस्थान करता है। राजमहल छोड़ते ही अनेक-प्रकार के शुभ शकुन होने लगते हैं तथा आकाश से पुष्प वृष्टि होती है एवं नन्दन वन की सुगन्धित वायु चलने लगती है। विजय यात्रा के ही क्रम में शरद् ऋतु का मनमोहक चित्रण कवि करने लगता है। उसके सैनिकों के प्रयाण से शालि के खेत नष्ट होने लगते हैं तथा वहाँ से वह अपनी सेना के साथ सोण भद्र के किनारे आता है, वहीं से विन्ध्य पर्वत-माला शुरु होती है। यहाँ कवि ने विन्ध्यवासिनी देवी का बड़ा ही मनोरम चित्रण उपस्थित किया है। विन्ध्य

Scanned with OKEN Scanner